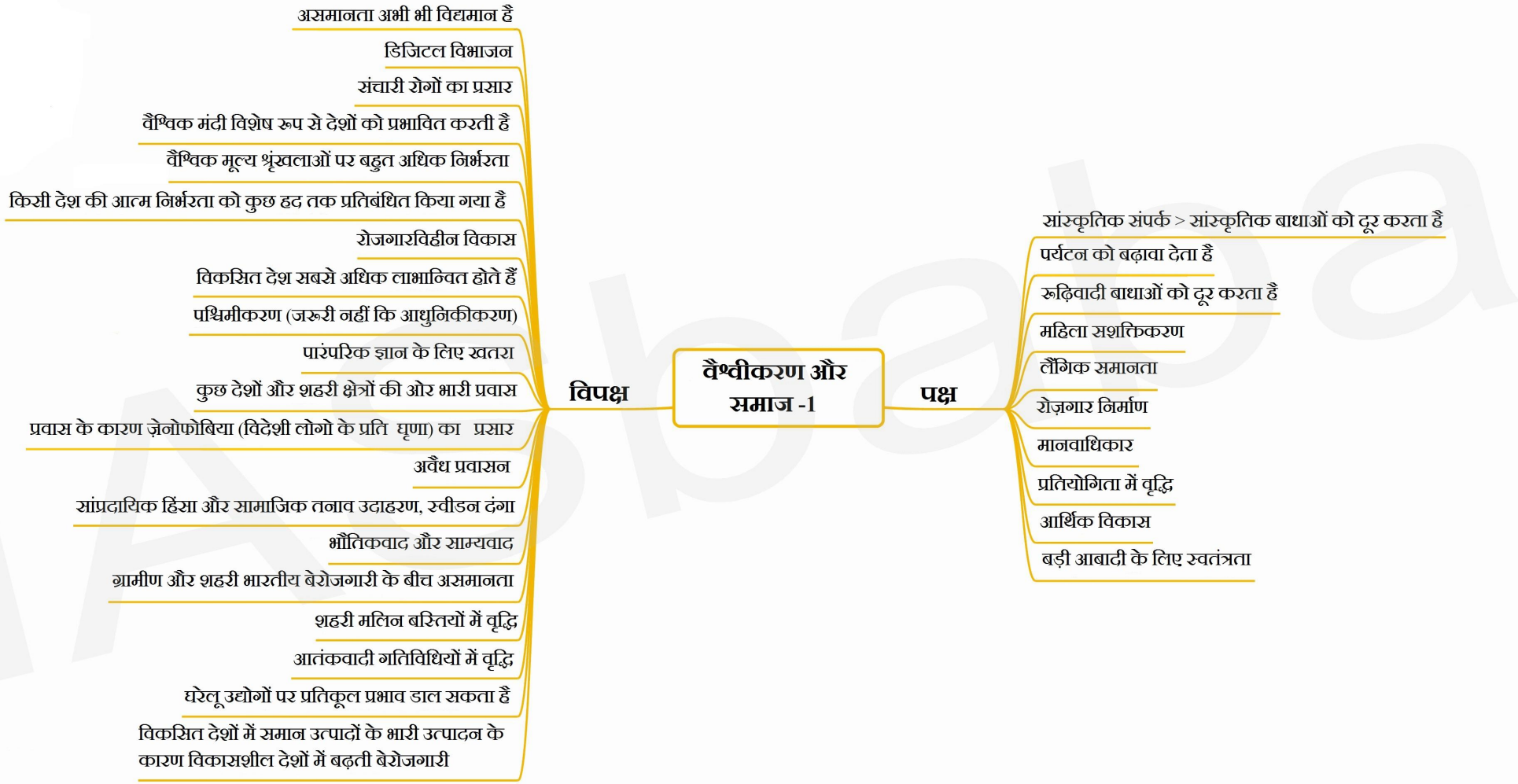
वैश्वीकरण और समाज -1
पक्ष
सांस्कृतिक संपर्क > सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करता है
पर्यटन को बढ़ावा देता है
रूढ़िवादी बाधाओं को दूर करता है
महिला सशक्तिकरण
लैंगिक समानता
रोज़गार निर्माण
मानवाधिकार
प्रतियोगिता में वृद्धि
आर्थिक विकास
बड़ी आबादी के लिए स्वतंत्रता
विपक्ष
असमानता अभी भी विद्यमान है
डिजिटल विभाजन
संचारी रोगों का प्रसार
वैश्विक मंदी विशेष रूप से देशों को प्रभावित करती है
वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं पर बहुत अधिक निर्भरता
किसी देश की आत्म निर्भरता को कुछ हद तक प्रतिबंधित किया गया है
रोजगारविहीन विकास
विकसित देश सबसे अधिक लाभान्वित होते हैं
पश्चिमीकरण (जरूरी नहीं कि आधुनिकीकरण)
पारंपरिक ज्ञान के लिए खतरा
कुछ देशों और शहरी क्षेत्रों की ओर भारी प्रवास
प्रवास के कारण ज़ेनोफोबिया (विदेशी लोगो के प्रति घृणा) का प्रसार
अवैध प्रवासन
सांप्रदायिक हिंसा और सामाजिक तनाव उदाहरण, स्वीडन दंगा
भौतिकवाद और साम्यवाद
ग्रामीण और शहरी भारतीय बेरोजगारी के बीच असमानता
शहरी मलिन बस्तियों में वृद्धि
आतंकवादी गतिविधियों में वृद्धि
घरेलू उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकता है
विकसित देशों में समान उत्पादों के भारी उत्पादन के कारण विकासशील देशों में बढ़ती बेरोजगारी

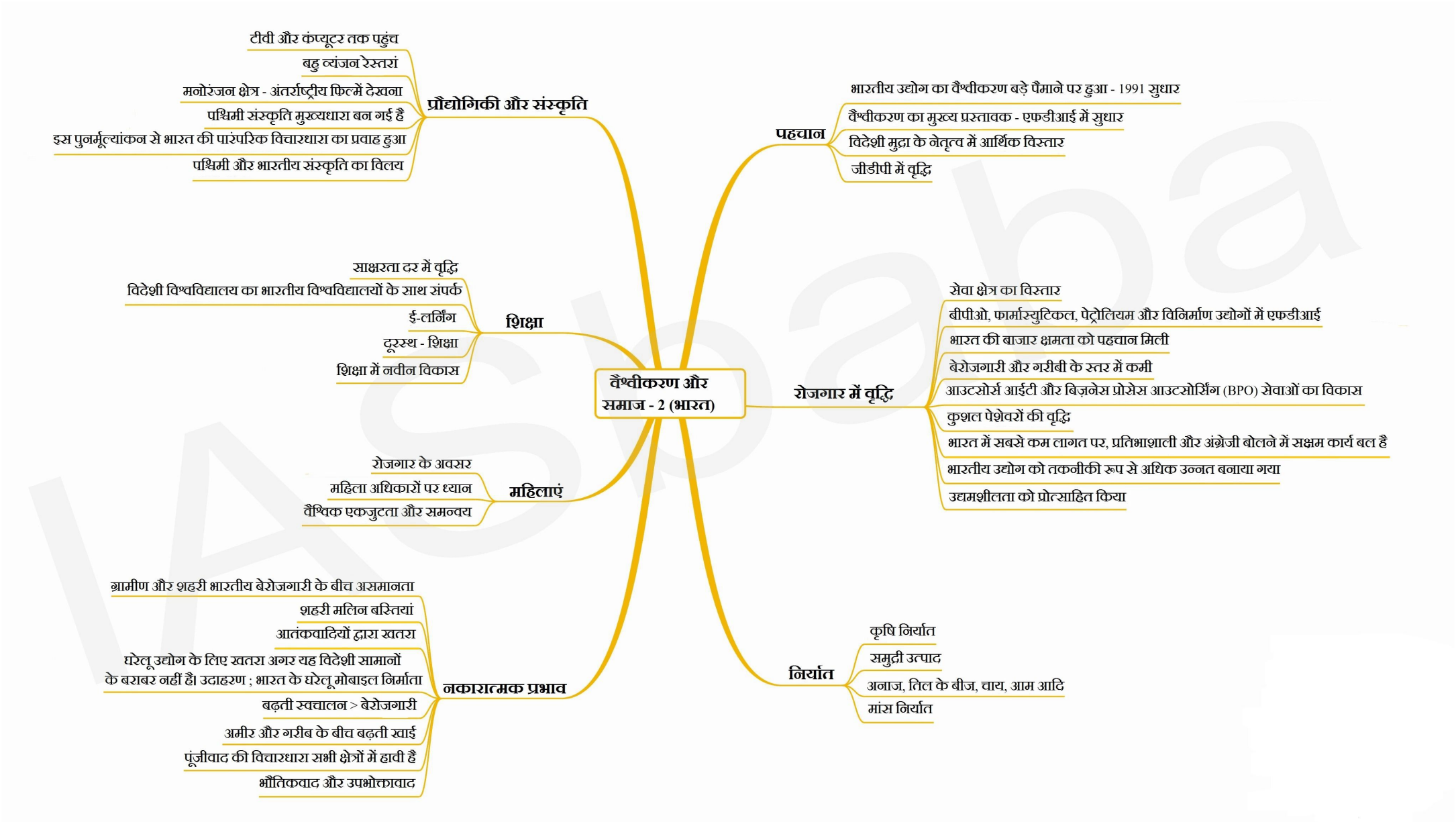
वैश्वीकरण और समाज - 2 (भारत)
पहचान
भारतीय उद्योग का वैश्वीकरण बड़े पैमाने पर हुआ - 1991 सुधार
वैश्वीकरण का मुख्य प्रस्तावक - एफडीआई में सुधार
विदेशी मुद्रा के नेतृत्व में आर्थिक विस्तार
जीडीपी में वृद्धि
रोजगार में वृद्धि
सेवा क्षेत्र का विस्तार
बीपीओ, फार्मास्युटिकल, पेट्रोलियम और विनिर्माण उद्योगों में एफडीआई
भारत की बाजार क्षमता को पहचान मिली
बेरोजगारी और गरीबी के स्तर में कमी
आउटसोर्स आईटी और बिज़नेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) सेवाओं का विकास
कुशल पेशेवरों की वृद्धि
भारत में सबसे कम लागत पर, प्रतिभाशाली और अंग्रेजी बोलने में सक्षम कार्य बल है
भारतीय उद्योग को तकनीकी रूप से अधिक उन्नत बनाया गया
उद्यमशीलता को प्रोत्साहित किया
निर्यात
कृषि निर्यात
समुद्री उत्पाद
अनाज, तिल के बीज, चाय, आम आदि
मांस निर्यात
नकारात्मक प्रभाव
ग्रामीण और शहरी भारतीय बेरोजगारी के बीच असमानता
शहरी मलिन बस्तियां
आतंकवादियों द्वारा खतरा
घरेलू उद्योग के लिए खतरा अगर यह विदेशी सामानों के बराबर नहीं है। उदाहरण ; भारत के घरेलू मोबाइल निर्माता
बढ़ती स्वचालन > बेरोजगारी
अमीर और गरीब के बीच बढ़ती खाई
पूंजीवाद की विचारधारा सभी क्षेत्रों में हावी है
भौतिकवाद और उपभोक्तावाद
महिलाएं
रोजगार के अवसर
महिला अधिकारों पर ध्यान
वैश्विक एकजुटता और समन्वय
शिक्षा
साक्षरता दर में वृद्धि
विदेशी विश्वविद्यालय का भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ संपर्क
ई-लर्निंग
दूरस्थ - शिक्षा
शिक्षा में नवीन विकास
प्रौद्योगिकी और संस्कृति
टीवी और कंप्यूटर तक पहुंच
बहु व्यंजन रेस्तरां
मनोरंजन क्षेत्र - अंतर्राष्ट्रीय फिल्में देखना
पश्चिमी संस्कृति मुख्यधारा बन गई है
इस पुनर्मूल्यांकन से भारत की पारंपरिक विचारधारा का प्रवाह हुआ
पश्चिमी और भारतीय संस्कृति का विलय